फरीदाबाद मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 63 | सितम्बर 1993 | 1/-

एड्स : क्या यह युद्धों के लिये सरकारों के प्रयोगों की उपज है?

कुछ समय से मानवों के लिये यह आवश्यक/अनिवार्य हो गया है कि अपनी जरूरतों की पूर्ति वे खरीद-फरोख्त के जरिये करें। विक्री के लिये उत्पादन, मन्डी के लिये प्रोडक्शन का आज दुनियां में दवदवा है। मार्केटों के जाल ने विश्व मन्डी का गटन किया हुआ है। छोटी मार्केटों को संगटित व संचालित करने और विश्व मन्डी के अखाड़े में ताल टोंकने वाली प्रमुख गिरोहवन्दियाँ राष्ट्रों-देशों के रूप में संगटित हुई हैं। मन्डी की होड़ ने कम से कम लागत की हवस पैदा करने के साथ ही तोपों की मोर्चावन्दी भी खड़ी की है। युद्ध की तैयारी हर राष्ट्र-देश के सर्वोपरि कार्यों में है। इसके लिये विभिन्न किस्म के हथियारों का निर्माण-प्राप्ति, फौजों को उन शस्त्रों से लैस करना, और नये व अधिक घातक हथियारों की रिसर्च के वास्ते प्रयोगशालाओं-वैज्ञानिकों को योजनावद्ध करने का काम आज हर सरकार करती है। विश्व में वैज्ञानिक अनुसन्धान, साइन्स में रिसर्च आज मुख्यतः युद्ध के लिये तथा कम से कम लागत पर उत्पादन (यानि, मजदूरों को कम से कम वेतन देकर उनसे अधिक से अधिक प्रोडक्शन लेना) के लिये हो रही है।

एड्स नामक वीमारी ने आज दुनियां-भर में दहशत फैला रखी है। मानव शरीर की प्रतिरोध की क्षमता को नष्ट कर देने वाला एक जीवाणु-वायरस फिर किसी भी वीमारी से जल्द मौत का कारण वन जाता है। इसे ही एड्स कहते हैं। 1981 में एड्स मरीजों की पहली बार सार्वजनिक चर्चा हुई। आज पृथ्वी के लगभग हर क्षेत्र में एड्स से पीड़ित हैं और एड्स के भूत का व्यापक प्रचार-प्रसार विभिन्न किस्म के पुरातनपन्थी वन्धनों को नवजीवन दे रहा है।

अव तक प्रचारतन्त्रों ने एड्स की उत्पत्ति के वारे में जो वातें की हैं उनमें से कुछ यह हैं : 1981 में जाने-माने डॉक्टरों और वैज्ञानिकों ने समलैंगिकी को एड्स का जनक कहा और अखवारों-रेडियो-टी वी, पादरियों-पुजारियों तथा सरकारों ने इस वात का वड़े पैमाने पर प्रचार-प्रसार किया। तथ्यहीन सावित हो जाने के वावजूद आम लोगों में अव भी यह धारणा व्यापक है जवकि पीठाधीश डॉक्टरों/वैज्ञानिकों और सरकारों के लिये समलैंगिकी वाली वात आई-गई हो गई है। 1982 में एक प्रतिष्ठित विज्ञान केन्द्र ने घोपित किया कि एड्स की उत्पत्ति समलैंगिकों से नहीं है वल्कि यह अमरीकी महाद्वीपों के बीच स्थित हैती द्वीप के निवासियों की खासियत है। इसका भी व्यापक प्रचार हुआ और हैती निवासियों का अछूतों के तौर पर तिरस्कार आरम्भ हुआ। 1985 में उसी प्रतिष्ठित वैज्ञानिक संस्था ने घोपणा की कि एड्स की उत्पत्ति हैती द्वीप से नहीं हुई है। फिर भी, हैती निवासी आज भी शक-शुवहा से देखे जाते हैं। दरअसल, 1985 में पुरस्कारों से लदे डॉक्टरों/वैज्ञानिकों ने करोड़ों रुपये रिसर्च पर खर्च करने के वाद यह घोपित किया था कि एड्स की उत्पत्ति अफ्रीका में पाये जाने वाले हरे वृन्दरों से हुई है। कहानियां थी : बन्दरों से सेक्स सम्बन्ध बनाने/बन्दरों का मांस खाने वाले पश्चिमी अफ्रीका के मनुष्यों से यह वीमारी दुनियां में फैली है। ऐसी कहानियों को हाड़-माँस देने के लिये आँकड़ों और मेडिकल रिपोर्टों के ढेर लगा कर यह सिद्ध करने की कोशिशें हुई कि एड्स का अस्तित्व अफ्रीका में काफी समय से है – किसी ने 1970 तो किसी ने 1959 की तारीखों को एड्स की उत्पत्ति सिद्ध करते हुये प्रमुख वैज्ञानिक पत्रिकाओं में रिसर्च पेपर छपवा कर तरक्की की सीढ़ी पर तेजी से कदम बढ़ाये। और, अखवारों-रेडियो-टी वी ने मिर्च-मसाले लगा कर इन नई कहानियों को भी व्यापक प्रचार-प्रसार दिया। हालांकि आज भी भारत में बहुत लोग हनुमान द्वारा सूरज को मुंह में रख लेने के किस्से को सत्य मानते हैं पर किस्से तो किस्से ही होते हैं और अफ्रीका को एड्स की जननी बताने वाला किस्सा भी शीघ्र ही दम तोड़ने लगा। ऐसी स्थितियों में जैसे कि अक्सर होता है, कई विद्धान वैज्ञानिकों ने एड्स को पृथ्वी के बाहर से आया हुआ होने के किस्से को हवा देनी शुरू कर दी है। उपरोक्त के मद्देनजर अगली बार आपसे जब कोई यह कहे कि डॉक्टर ने कहा है/वैज्ञानिक ने कहा है इसलिये मानो, तो विज्ञान को नया देवता मान कर सिर नवाने की बजाय मामले को जरा कुरेद कर देखें।

क्या बड़े-बड़े डॉक्टर/वैज्ञानिक इतने भोले हैं जितने वे अब तक के घटनाक्रम में नजर आये हैं अथवा कोई चीज छिपाने के प्रयास हो रहे हैं? रसायन शास्त्र का इस्तेमाल तो युद्ध सामग्री निर्माण के लिये दीर्घकाल से हो ही रहा है, काफी समय से जीव विज्ञान में भी युद्ध के लिये घातक कीटाणु विकसित करने का काम लेवोरेट्रियों में हो रहा है। 1950-52 से वंश निर्धारण करने वाली जीन पर भी इस सिलसिले में बढ-चढ़ कर काम हो रहा है। वैज्ञानिकों के झुण्ड जाने-अनजाने में इस काम में जुटे हैं। कहीं पर कैन्सर पर रिसर्च के नाम पर यह काम हो रहा है तो कहीं किसी और आड़ में तथा फौजों की लेबोरेट्रियों में तो खुलेआम पॉलिसी के तौर पर घातक से घातक कीटाणु विकसित करने पर अरबों रुपये खर्च किये जा रहे हैं। काम की रफ्तार बढ़ाने के लिये कई रत्न-जटित मेडल लटके हैं – डॉक्टर हरगोविन्द खुराना आदि-आदि इस सिलसिले में नोवेल प्राइज आदि पुरस्कार ले चुके हैं। इन रिसर्चों के माध्यम से 1971 आते-आते उस तकनिकी स्तर पर पहुंचा जा चुका था जहां से एड्स जैसी घातक मार करने वाले कीटाणु लेबोरेट्रियों में निर्मित किये जा रहे हैं। फौजों की मांग ऐसे कीटाणुओं के लिये होती है जो उनके द्वारा चिन्हित निशानों पर चोट करें। आँख का रंग देख कर असर करे, वालों की बनावट के अनुसार छांट कर प्रभावकारी हो, रंग के आधार पर चुन कर चोट करे आदि-आदि जैसे मसले जनरलों-प्रधान मंत्रियों की चिन्हित निशानों पर मार वाली यह डिमान्ड वैज्ञानिकों के सम्मुख समाधान के लिये पेश करती है। इस सिलसिले में 1971 से एड्स पैदा करने वाले जैसे अत्याधिक घातक कीटाणु निर्मित करने का काम छोटे-छोटे टुकडों में बांट कर विभिन्न लेबोरेट्रियों में हो रहा है। 1979 में अमरीका के कैलिफोर्निया प्रान्त में एक दुर्लभ किस्म का निमोनिया लोगों में दिखाई पड़ा। जांच करने पर पता चला कि वह निमोनिया लेबोरेट्रियों में नये-नये कीटाणु निर्मित करने के दौरान बने किसी जीवाणु से फैला था। इसी सिलसिले में जाने-अनजाने में किसी लेबोरेट्री से वह जीवाणु निकले जिन्होने एड्स को जन्म दिया है। एड्स के पहले मरीजों का पता चलते ही इस घातक बीमारी के जीवाणुओं की उत्पत्ति के स्थान को छिपाने के लिये प्रतिष्ठित डॉक्टरों/वैज्ञानिकों और सरकारों ने बड़े पैमाने पर झूट-फरेब का सहारा लिया है। एड्स के जन्मदिन-जन्मस्थान में हुये ऑफिसियल परिवर्तनों का जो विवरण ऊपर आया है वह अज्ञान से अधिक हकीकत को छिपाने के लिये किये गये प्रयासों की वजह से है।

अब शायद ही कोई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक इस बात से इनकार करता है कि आज लेबोरेट्री में एड्स के जीवाणु बनाये जा सकते हैं। यह भी [illegible] कि एड्स का

(वाकी पेज दो पर)

पाठकों से

इस अखबार में हम महिला एवं पुरूष मजदूरों के जीवन और आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा में पाठकों की अधिकाधिक भागीदारी के इच्छुक हैं। अपनी फैक्ट्री में, अपनी वस्ती में, अपनी निजी जिन्दगी में अथवा अन्यत्र निगाह में आई ऐसी सामग्री हमें भेजें। हम ऐसे मैटेरियल को प्रकाशित करने की कोशिश करेंगे – नाम देना अथवा नहीं देना लिखनेवालों की इच्छा पर है। अपनी वात छपवाने के लिये आपको कोई पैसे खर्च नही करने पड़ेंगे। बेझिझक और विस्तार से अपनी वात हम तक पहुंचायें – स्वयं नही मिल सकें तो डाक से हमें भेजें।

इस अखबार में प्रकाशित सामग्री को स्वतंत्रता से पुनः प्रकाशित कर सकते हैं। ऐसे प्रकाशनों की हमें सूचना देंगे तो हमें अच्छा लगेगा।

[illegible] 121001 [illegible]

परिवर्तन के कदम

आर्थिक समता के लिये संगठन का परिचय

(अमरीका के मिशिगन प्रान्त में मजदूर वर्ग से आये एक पर्चे पर विचार करें)

अपने व अन्य मजदूरों के जीवन-स्तर को गिरते देख कर पश्चिमी मिशिगन में रह रहे कुछ लोगों के स्वतन्त्र समूह ने यह संगठन बनाया है। बेरोजगारी, अपराध और गरीबी को हम बढ़ते पैमाने पर देख रहे हैं। इनके साथ-साथ चिकित्सा सुविधा, शिक्षा और परिवार की हालत में हम गिरावट देख रहे हैं। यह समस्यायें पृथ्वी पर हमारे क्षेत्र में ही नहीं हैं बल्कि यह विश्व-भर में अरबों लोगों की समस्यायें हैं।

इस संगठन के अधिकतर सदस्य फैक्ट्रियों में काम कर रहे मजदूर हैं। कुछ छात्र व रिटायर्ड लोग भी सदस्य हैं। फरवरी 1992 से रेगुलर मीटिंगों के एक सिलसिले के बाद जून 92 में संगठन बना।

इस संगठन के सदस्यों को आपस में जोड़ने वाली मान्यता यह है : अनुचित आर्थिक व्यवस्था स्रोत है उस अन्याय और असुरक्षा का जिसे मेहनतकश भुगतते हैं। उदाहरण के लिये "स्वतन्त्र मंडी" व्यवस्था बेरोजगारी, गरीबी, बच्चों पर दुराचार और नस्लवाद जैसी सामाजिक समस्याओं की सृष्टि करती तथा उन्हें पालती-पोसती है। नौकरियाँ छूटना और कम पड़ रही नौकरियों के लिये होड़ लोगों में एक-दूसरे के प्रति शंका और नस्लवाद को बढ़ाती है। यह अर्थव्यवस्था हमारी रिहाइश के स्थान - हमारे कार्य के ढंग - हमारे वेतन में लगातार परिवर्तन लाती है और लोगों व समुदायों के जीवन में स्थायित्व को समाप्त करती है। अतः हमारी मान्यता है कि लोगों के जीवन में टिकाऊ न्याय और सुरक्षा मन्डी व्यवस्था की समाप्ति के साथ ही आयेगी। साथ ही, हमें पता है कि भूख और बेघरबारी जैसी कई समस्यायें तत्काल एक्शन की मांग करती हैं। इसलिये इस हृदयहीन व्यवस्था द्वारा दिये जा रहे दुख-दर्द और कष्टों को कम करने के लिये जो प्रयास हो रहे हैं उनका हम समर्थन करते हैं। लेकिन ऐसे प्रयास सामाजिक समस्याओं का स्थाई समाधान नहीं कर सकते। मानव दुर्गति, हिंसा और फूट के बने रहने की वजह से हमारी दृढ़ मान्यता है कि समस्त सद्इच्छाओं के बावजूद राजनीतिज्ञों एवं समाजसुधारकों द्वारा इन समस्याओं का स्थाई समाधान नहीं हो सकता।

संगठन के सदस्यों की मान्यता है कि सब नस्लों और भिन्न आमदनी वाले सब मजदूरों द्वारा स्वतंत्रता की नई घोषणा के उद्घोष का समय आ गया है। आजादी हमें एक दमनकारी आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था से चाहिये, पूंजीवाद से चाहिये, मंडी व्यवस्था से चाहिये। साथ ही हमें पूंजीवाद से भिन्न एक नये समाज का निर्माण करना है। नये समाज में सब लोग जीवनयापन के लिये आवश्यक चीजों के उत्पादन और उपभोग में बराबरी के हिस्सेदार होंगे।

हमारे सम्मुख दोहरा कार्य है। पहला काम है अन्य लोगों को यह स्पष्ट करना कि : 1) मार्केट सिस्टम सामाजिक समस्याओं की जड़ है, 2) इस अर्थव्यवस्था में इन समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता, 3) पूंजीवाद और इसकी राजनीतिक व्यवस्था की समाप्ति के साथ ही समाधान की राह खुलेगी, और 4) इस व्यवस्था को समाप्त करने के लिये लोगों द्वारा किये जा सकने वाले काम। पूंजीवाद को प्रतिस्थापित करने के लिये लोग किस प्रकार के समाज का निर्माण करें इस बारे में विचार-विमर्श आरम्भ करना हमारे कार्य का दूसरा हिस्सा है।

काम आसान नहीं है। सरकार, कम्पनियों-कारपोरेशनों, टेलीविजन, अखबारों, स्कूलों और कुछ गिरजाघरों तक के प्रोपगन्डा का हमें मुकाबला करना ही होगा। पर यह आशाहीन कार्य नहीं है। पूंजीवाद के क्षय की वजह से बढ़ती दुर्गति लोगों को उन विचारों पर सवाल उठाने को भी प्रेरित करती है जिन्हें वे अब तक हर समय मानते थे।

संगठन के सदस्य कार्यदल और समितियां बनाकर अध्ययन समूह, विचार-गोष्ठी, सार्वजनिक सभा संगठित करते हैं और उनमें विभिन्न तरीकों से अपने विचार रखते हैं। हम पर्चे लिखते और बांटते हैं; कार्यस्थल पर मजदूरों के एक्शनों का समर्थन करते हैं; तथा एक बेहतर दुनियां के लिये कार्य में अन्य ग्रुपों के साथ सहयोग करते हैं।

अगर आप एक नये समाज की आवश्यकता समझते हैं तो हम आशा करते हैं कि आप इस प्रयास में हम से जुड़ेंगे। इस संगठन की सदस्यता उन सब व्यक्तियों के लिये खुली है जो मंडी व्यवस्था को सामाजिक समस्याओं का मुख्य कारण मानते हैं।

हम यह भी आशा करते हैं कि आप हमसे सम्पर्क करेंगे ताकि हम वीडियो प्रदर्शन, गोष्ठी आदि गतिविधियों की सूचना आपको भेज सकें।

अधिक जानकारी के लिये लिखें

The Society for Economic Equality (S.E.E.) P.O. Box 1564, GRAND RAPIDS, MI 49501, U.S.A.

एड्स ......

(पेज एक का शेष)

जन्म उसी समय हुआ है जब एड्स को पैदा करने वाले जीवाणु लेबोरेट्री में बनाने की तकनीक विकसित हो गई थी।

जनरलों-प्रधान मंत्रियों और उन वैज्ञानिकों जिन्होंने एड्स के जीवाणु पैदा करने वाली तकनीक विकसित की है उनकी परेशानी एड्स की घातकता नहीं है, वे तो इससे भी घातक कीटाणु चाहते हैं तथा उनकी प्राप्ति के लिये दिन-रात काम जारी है। फौजों और उनकी रिसर्च प्रोजेक्टों के संचालक वैज्ञानिकों की दिक्कत यह है कि एड्स उन द्वारा निर्धारित निशानों में ही फैले ऐसा नियन्त्रण वे एड्स पैदा करने वाले जीवाणुओं पर अभी स्थापित नहीं कर पाये हैं— इस दिशा में प्रयास जारी हैं।

एड्स की उत्पत्ति मात्र एक उदाहरण है आज बड़े पैमाने पर हो रही एटम बमों, मिसाइलों आदि के निर्माण वाली मानवद्रोही रिसर्च का। विश्व के बेहतरीन मस्तिष्क क्यों ऐसे कार्यों में लगे हैं? क्या यह वैज्ञानिकों की निजी कमजोरियों की वजह से ही है अथवा इसकी जड़ सामाजिक है?

(सामग्री हमने बेल्जियम से प्रकाशित 'कम्युनिज्म' के जुलाई 1993 के अंक से ली है।)

पांच-छह अरब लोगों के हाथों में अर्थपूर्ण भविष्य की कुंजी है — पांच-छह अरब के सचेत सामूहिक हाथों में। मजदूर पक्ष के निर्माण के लिये आवश्यक सचेत सामूहिक एकता में योगदान के उद्देश्य से हम यह अखबार प्रकाशित करते हैं।

केल्विनेटर

23 माइलस्टोन मथुरा रोड स्थित केल्विनेटर के लेमिनेशन प्लान्ट में 300 वरकर काम करते हैं। यहीं परकेल्विनेटर की कन्ट्रोल डिवीजन, कैश रजिस्ट्रेक्स, कॉपर वायर और माइक्रो ओवन प्लान्ट भी हैं। केल्विनेटर के वल्लबगढ़ प्लान्टों में कुल 700 मजदूर हैं।

लेमिनेशन डिवीजन में 1400 फ्रिज के लिये रोटर स्टेटर के निर्धारित प्रोडक्शन से अधिक प्रोडक्शन देने पर वरकरों को इंडिवीजुअल इन्सैन्टिव दिया जाता था। यह 250 से 500 रुपये प्रतिमाह तक हो जाता था। जुलाई 92 में मैनेजमेंट और यूनियन के बीच तीन साला एग्रीमेंट हुआ। एग्रीमेंट की पहली साल में 170 रुपये प्रतिमाह वेतन में बढ़ोतरी के बदले में लेमिनेशन वरकरों के लिये 1400 की जगह1800 रोटर स्टेटर प्रतिदिन देना निर्धारित किया गया। यह केल्विनेटर के इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित मुख्य प्लान्ट के चार हजार मजदूरों के लिये 1400 की जगह 1800 फ्रिज प्रतिदिन की बात से जुड़ी थी।

जुलाई 92 की मैनेजमेंट-यूनियन एग्रीमेंट से केल्विनेटर के लेमिनेशन वरकरों को मिल रहा 250 से500 रुपये प्रतिमाह इंडिवीजुअल इन्सैन्टिव खत्म हो गया। इससे हुआ यह कि 170 रुपये जोड़ने के बाद भी लेमिनेशन वरकरों को मिल रहे पैसे 80 से 330 रुपये प्रतिमाह कम हो गये। वर्क लोड बढ़ा दिया गया और पैसे कम कर दिये गये ! मजदूरों ने इसका जम कर विरोध करना आरम्भ किया।

लेमिनेशन वरकरों ने कहा कि हमें एग्रीमेंट नहीं चाहिये और कि हमें पुराने रेट से भुगतान किया जाये। केल्विनेटर मैनेजमेंट यूनियन के साथ हुये समझौते पर अड़ गई। इस पर जनवरी 93 में लेमिनेशन प्लान्ट के स्क्यूइंग, डाई कास्टिंग, ऑरगन वैल्डिंग आदि के मजदूरों ने कदम उठाये। मैनेजमेंट की टाइम स्टडी के मुताबिक स्क्यूइंग के वरकर के लिए 8 घन्टे में निर्धारित प्रोडक्शन 134 था जबकि हर वरकर 270 का प्रोडक्शन दे रहा था। डाई कास्टिंग में इसी प्रकार निर्धारित प्रोडक्शन 330 था पर वरकर 600 पीस दे रहे थे। ऑरगन वैल्डिंग में मैनेजमेंट टाइम स्टडी से निर्धारित प्रोडक्शन 420 था, वरकर 650 पीस दे रहे थे। इस साल जनवरी से सब मजदूरों ने मैनेजमेंट की टाइम स्टडी द्वारा निर्धारित प्रोडक्शन देना शुरू कर दिया। इस पर मैनेजमेंट बौखलाई और चार्जशीटों व चेतावनियों की झड़ी लगा दी। केल्विनेटर मैनेजमेंट ने कम्पनी बन्द होने का डर मजदूरों को दिखाया। यूनियन वालों ने लेमिनेशन मजदूरों को धमकाने-डराने-पुचकारने का सिलसिला शुरू किया। लेकिन वरकर चुपचाप अपना निर्धारित प्रोडक्शन करते रहे। इस खींचा-तान को चलते जब पांच महीने हो गये तब 28 मई को केल्विनेटर मैनेजमेंट झुकी। लेमिनेशन डिवीजन के वरकरों को 250 से 500 रुपये प्रतिमाह इंडिवीजुअल इन्सैंटिव पुरानी दर से प्रोडक्शन करने पर देना मैनेजमेंट ने शुरू कर दिया है। 1992 वाली मैनेजमेंट-यूनियन एग्रीमेंट के 170 रुपये लेमिनेशन वरकरों के लिये ऊपर से हैं।

"एग्रीमेंट है तो माननी ही पड़ेगी" के हव्वे की हवा केल्विनेटर के लेमिनेशन वरकरों ने निकाली। 12 (3) के तहत हों चाहे और किसी धारा-उपधारा के तहत हों, जिन एग्रीमेंटों को मजदूर नापसन्द करते हैं उन्हें वे अंगूठा दिखा सकते हैं बशर्ते वरकर मिल कर कदम उठायें।

घन्टी-घन्टे गेडोर के

1980 वाले विश्व मन्दी के झटके में जर्मनी में गेडोर हैन्ड टूल्स के तीनों प्लान्ट बन्द हो गये और भारत में गेडोर के छह प्लान्टों का नाम झलानी टूल्स हो गया। संकट के भंवर से निकलने के लिये सरकार के सहयोग से मैनेजमेंट और यूनियन ने 1984-85 में फरीदाबाद स्थित तीन प्लान्टों से डेढ हजार मजदूरों को मार-पीट कर नौकरी से निकाला। फिर भी कम्पनी का संकट बना रहा। इस पर झलानी टूल्स मैनेजमेंट ने फरीदाबाद के प्लान्टों में खड़ा मनहूस खजूर का पेड़ कटवाया और सैकेन्ड प्लान्ट में संगमरमर का मन्दिर बनवाया। देवी ने तीनों प्लान्टों की कैन्टीनों में मजदूरों को मिलते अन्डे और मीट बन्द करवा दिये पर संकट पर देवी का भी वस नहीं चला। झलानी टूल्स पिछले कई वर्ष से सरकार द्वारा सिक घोषित बीमार कम्पनी है।

सैकेन्ड प्लान्ट में विराजमान देवी को नहलाने-धुलाने-भोग लगाने तथा मन्दिर में घन्टी बजाने की ड्यूटी झलानी मैनेजमेंट ने थर्ड प्लान्ट के एक वरकर की लगा दी। थर्ड प्लान्ट का वह मजदूर तीन साल से श्रद्धापूर्वक सैकेन्ड प्लान्ट में देवी की पूजा-अर्चना कर रहा है तथा उसे अब तक कोई दिक्कत नहीं आई थी। लेकिन दस अगस्त को जब जुलाई माह का वेतन दिया गया तब मैनेजमेंट ने अन्य कई मजदूरों के वेतन में कटौती की ही तरह पुजारी वरकर की तनखा मे से भी पैसे काट लिये। क्या पुजारी वरकर ने घन्टी कम बजाई थी? क्या उसने आठ घन्टे की ड्यूटी में औसतन पांच घन्टे घन्टी नहीं बजाई?

मामला बहुत पेचीदा है और सी बी आई का कोई अफलातून ही इसे सुलझा सकता है। गोपीचन्द जासूस की सेवा में हमारे पास जो थोड़ी-सी जानकारी है वह प्रस्तुत है। चार साल पहले झलानी टूल्स मैनेजमेंट और सीटू यूनियन ने तीन साला एग्रीमेंट में मजदूरों के लिये प्रोडक्शन टारगेट तय किये थे। मैनेजमेंट-यूनियन ने इन्हें चार घन्टे का प्रोडक्शन कहा था जिसे मजदूरों को आठ घन्टे की ड्यूटी में पूरा करना था। बिजली, मैटेरियल और दुरूस्त मशीन उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी मैनेजमेंट की नहीं थी। कैसे भी करके मजदूरों को महीने-भर में चार घन्टे का औसत लाना था। चार से ज्यादा घन्टे बनाने पर इन्सैन्टिव था और चार से कम रह जाने पर वेतन में कटौती का प्रावधान था।

अब झलानी टूल्स के फरीदाबाद प्लान्टों में बाइसी-तेइसी वरकर ही रह गये हैं। चार घन्टे वाली एग्रीमेंट के अनुसार कई बार सैंकड़ों मजदूरों के वेतन में दो सौ से नौ सौ रुपये तक की कटौती की गई। मजदूरों द्वारा तीव्र विरोध होने पर नई शर्तें थोप कर आमतौर पर मैनेजमेंट ने वेतन में से काटे पैसे वापस कर दिये लेकिन कई वरकरों के काटे पैसे मैनेजमेंट ने नहीं लौटाये। साल-भर पहले हुये यूनियन चुनावों में चार घन्टे वाले नेता चुनाव हार गये। नये नेताओं ने नई तीन साला एग्रीमेंट में वर्क लोड और भी बढ़ा दिया – पुराने चार की जगह पांच घन्टे ! इससे और भी ज्यादा मजदूरों के वेतन में कटौती होने लगी है।

इस बात की हम गारन्टी दे सकते हैं कि सैकेन्ड प्लान्ट स्थित मन्दिर में घन्टी बजाने की ड्यूटी पर लगाये गये थर्ड प्लान्ट के वरकर ने घन्टी कम नहीं बजाई है। गवाही में सैकेन्ड प्लान्ट के मजदूर कहते हैं कि पुजारी वरकर आठों घन्टे घन्टी बजा कर कान खाता रहता है। तो फिर उसके घन्टे पूरे कैसे नहीं हुये? पुजारी वरकर की तनखा किस बात के लिये काटी गई है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि सैकेन्ड प्लान्ट में घन्टी बजा रहे वरकर की तनखा भी सज-धज कर घूमते लीडरों की तरह थर्ड प्लान्ट में उसकी डिपार्टमेंट में बनती हो? क्या उसकी डिपार्टमेंट के वरकर घन्टे पूरे नहीं कर पाये? गोपीचन्द जासूस, शुरू हो जाओ !

एकता की राह पर

–शेर सिंह

कुवैत में मीना अल-अब्दुल्लाह तेल रिफाइनरी में कार्यरत फिलिपीन, श्रीलंका, बंगलादेश और भारत से गये दो हजार मेन्टेनैन्स वरकरों के सम्मुख खराब वर्किंग कन्डीशन, भारी वर्क लोड और रैस्ट के लिये बहुत कम समय की समस्यायें थी। प्रवासी-परदेसी-विदेशी का लेबल इन मजदूरों की अतिरिक्त दिक्कत थी।

विरासत में मिले संस्कारों द्वारा खड़ी की बाधाओं तथा अन्य अवरोधों को पार करते हुये अल-अब्दुल्लाह तेल रिफाइनरी के दो हजार मेनटेनैन्स वरकर संगठित हुये। भारत, बंगलादेश, श्रीलंका और फिलिपीन से गये मजदूर एकजुट हुये और अपनी समस्याओं के समाधान के लिये उन्होंने 7 अगस्त को हड़ताल की।

मजदूरों के इस कदम से बौखला कर आजाद कुवैत की सरकार की पुलिस ने हड़ताली मजदूरों पर बर्बर हमले किये। फिलिपीन-बंगलादेश-श्रीलंका-भारत में जन्मे मजदूरों ने कुवैत सरकार की पुलिस के हमलों का एकजुट डट कर मुकाबला किया।

लन्दन के फाइनैंसियल टाइम्स ने अपने 8/9 अगस्त के अंक में तेल रिफाइनरी के मेन्टेनैन्स वरकरों की हड़ताल और मजदूरों द्वारा पुलिस हमलों के सशक्त विरोध को कुवैत में प्रवासी-परदेसी-विदेशी मजदूरों की अनहोनी-अस्वाभाविक घटना कहा है।

दमन-शोषण के प्रतिरोध के लिये तथा बेहतर जीवन के वास्ते संघर्ष के लिये अम्रीका-रूस-जर्मनी-ब्राज़िल-मिश्र-भारत- पाकिस्तान-कोरिया-.....में जन्मे मजदूरों की एकता की राह से बढ़ कर स्वाभाविक चीज आज क्या है?

(सामग्री हमने अंग्रेजी-स्पेनी-फ्रांसिसी में प्रकाशित 'चैलेंज' अखबार के 25 अगस्त 1993 के अंक से ली है।)

हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास में हड़ताल

इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास में बीस-पच्चीस लाख थरमस फ्लास्क सालाना बनते हैं। इस फैक्ट्री में 650 परमानेन्ट और 400 कैजुअल वरकर काम करते हैं। 16 अगस्त से वैक्यूम ग्लास में हड़ताल जारी है।

हर तीन साला एग्रीमेंट में प्रोडक्शन बढ़ाते-बढ़ाते वैक्यूम ग्लास मैनेजमेंट ने उत्पादन उस स्तर तक बढा दिया है कि परमानेन्ट मजदूरों से और अधिक पीस बनवाने की गुंजाइश उसे कम ही नजर आई। इस पर कुछ समय पहले मैनेजमेंट ने परमानेन्ट मजदूरों की छुट्टी करने और ठेके पर काम करवाने का निर्णय लिया। बिना किसी झंझट के अपनी स्कीम लागू करने के लिये मैनेजमेंट ने मजदूरों को समझाने के लिये विचार-विमर्श के नाम से फैक्ट्री में एक मीटिंग रखी। उस मीटिंग में मैनेजमेंट ने मजदूरों को बताया कि भट्टी से पूरा कांच नहीं निकल पाने से कम्पनी को काफी आर्थिक हानि उठानी पड़ रही है। भट्टी पर आठ अड्डे लगातार चलते हैं और दो अड्डे जब-तब चलते हैं। आर्थिक हानि नहीं होने देने के लिये मैनेजमेंट ने दो अड्डे ठेके पर देने का प्रस्ताव रखा। इस पर मजदूरों ने जब-तब चलते दो अड्डों को लगातार चलाने के लिये परमानेन्ट मजदूर रखने का सुझाव दिया — यूं भी वैक्यूम ग्लास में 400 कैजुअल वरकर हैं। हानि-लाभ के आंकड़ों की दलीलों में मजदूरों ने मैनेजमेंट को चित्त कर दिया।

विरोधी हितों के बीच मामले दलीलों से नहीं बल्कि ताकत से तय होते हैं। मजदूर पक्ष और मैनेजमेंटें दो परस्पर विरोधी हितों वाले पक्ष हैं। 16 जुलाई को वैक्यूम ग्लास मैनेजमेंट ने नोटिस लगा कर "कुछ अड्डे ठेके पर देने" का ऐलान कर दिया और रस्म पूरी करने के लिये नोटिस में यह भी जोड़ दिया कि कोई परमानेन्ट मजदूर नौकरी से नहीं निकाला जायेगा। अपनी ताकत दिखाने के लिये मैनेजमेंट ने मजदूरों को मिल रही सहूलियतों में कटौती की और अपनी स्कीम थोपने के लिये यूनियन से एग्रीमेंट की तथा एक नेता के आदमी को ठेका दे दिया।

नौकरी पर मंडरा रहे खतरे ने वैक्यूम ग्लास के मजदूरों में अपने हितों की रक्षा के लिये जूझने की भावना को बढाया। मजदूरों ने यूनियन लीडरों द्वारा की गई ठेके वाली एग्रीमेंट ठुकरा दी।

8 अगस्त को दो अड्डों पर ठेकेदार के वरकरों को लगाने पर फैक्ट्री में हंगामा हुआ। मैनेजमेंट ने एक वरकर सस्पैन्ड कर दिया और फैक्ट्री के अन्दर पुलिस बुला ली। 50–60 पुलिस वाले फैक्ट्री के अन्दर मजदूरों को डराने-धमकाने में जुटे लेकिन मैनेजमेंट और पुलिस के कन्ट्रोल में वरकर नहीं आये। मैनेजमेंट ने 13 और मजदूर सस्पैन्ड कर दिये तथा पुलिस ने फैक्ट्री के अन्दर आतंक के माहौल को बढाया। इस पर हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास के मजदूर 16 अगस्त को फैक्ट्री से बाहर निकल आये। मैनेजमेंट अदालत से मजदूरों के खिलाफ 100 गज वाला स्टे ले आई है और तब से वरकर सड़क पार फैक्ट्री गेट के सामने धरने पर बैठे हैं।

फैक्ट्री के अन्दर पुलिस के आतंक की जानकारी वैक्यूम ग्लास के वरकरों ने फरीदाबाद के अन्य मजदूरों को नहीं दी और न ही पुलिस आतंक के खिलाफ इन मजदूरों ने कोई कदम उठाया। यही सब कुछ समय पहले आटो लैम्प फैक्ट्री में हुआ था। फैक्ट्रियों के अन्दर पुलिस के आतंक के खिलाफ कुछ नहीं बोलने का माहौल फरीदाबाद में बनता जा रहा है। इस खतरनाक चुप्पी को तोड़ना मजदूर पक्ष के लिये बहुत जरूरी है और इसके लिये एक फैक्ट्री के अन्दर पुलिस आतंक की जानकारी अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों को देना प्राथमिक कदमों में है।

17 अगस्त को वैक्यूम ग्लास के सीनियर जनरल मैनेजर ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह मजदूरों को सद्‌बुद्धि दे। भगवान से अपनी प्रार्थना की जानकारी मैनेजर साहब ने मजदूरों को डाक से भेजी और साथ में एक दिन की हड़ताल के बदले 8 दिन का वेतन काटने तथा तालाबन्दी की धमकियां प्रसाद के रूप में भेजी।

इधर 14 सस्पैन्ड मजदूरों का हिसाब हो गया है। ठेकेदार काम करवा रहा है और पुलिस फैक्ट्री के अन्दर व बाहर पहरे पर है। छुट-पुट मार-पीट और गिरफ्तारी-जमानत वाले रूटीन लटके-झटके हुये हैं। एच एम एस के ऊपर वाले लीडर फैक्ट्री में अपने नेताओं को मजदूरों के सामने खरी-खोटी सुना कर उन्हीं लीडरों को कुर्सियों पर परमानेन्ट कर गये हैं। मैनेजमेंट से ठेकेदारी की एग्रीमेंट करने वाले नेता ही हड़ताल का नेतृत्व सम्भाले हैं और मैनेजमेंट से नेगोसियेशन कर रहे हैं।

हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास मजदूर छोटे और बड़े यूनियन लीडरों की मैनेजमेंट से मिलीभगत को अच्छी तरह समझ रहे हैं पर फिर भी हाथ पर हाथ धरे लीडरों के मुंह ताक रहे हैं। इससे हो यह रहा है कि मजदूर पक्ष की ताकत बढाने के लिये जरूरी हर रोज जलूस निकालने जैसे शुरूआती कदम भी नहीं उठाये जा रहे हैं। हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास को हितकारी पोट्रीज-थॉमसन प्रेस-केल्विनेटर बनने से रोकने के लिये जरूरी है कि वैक्यूम ग्लास के हड़ताली मजदूर संघर्ष समिति बना कर मजदूर पक्ष की ताकत बढाने के लिये फौरन कदम उठायें।

सीमेन्ट रिसर्च इन्सटीट्यूट

गुडईयर के सामने मथुरा रोड़ पर स्थित औद्योगिक अनुसन्धान क्षेत्र की जानी-मानी संस्था, सीमेन्ट रिसर्च इन्सटीट्यूट की मैनेजमेंट की मनमानी के खिलाफ वरकर संगठित आवाज उठा रहे हैं। मैनेजमेंट ने आर्थिक कठिनाइयों का जिक्र करके जून माह का आधे से भी कम वेतन जब वरकरों को दिया तब 30 जून को 200 वरकरों ने इन्सटीट्यूट के डाइरेक्टर जनरल को घेर लिया था। इस पर मैनेजमेंट ने 2 जुलाई को 6 वरकर सस्पैंड कर दिये। जवाब में वरकरों ने हड़ताल कर दी। मैनेजमेंट की "काम नहीं तो वेतन नहीं" की धमकी का जब वरकरों पर वांछित असर नहीं पड़ा तब मैनेजमेंट ने तालाबन्दी की धमकी दी। सीमेन्ट रिसर्च वरकर पढ़े-लिखे मजदूर हैं, मैनेजमेंटों के लॉक आउट वाले नये ब्रह्मास्त्र के सम्मुख वे कुछ पीछे हटे। 7 जुलाई को हड़ताल खत्म करके 8 से काम शुरू कर दिया और आठ-आठ की टोलियों में वरकर बीस-बाइस दिन इन्सटीट्यूट गेट पर भूख हड़ताल पर बैठे। कागजी घोड़े दौड़ाने के लिये इन पढे-लिखे मजदूरों को किसी का मुंह ताकना नहीं पड़ता, चिट्ठी-पत्री यह जरूरत से ज्यादा ही कर रहे हैं। काफी कानूनी कार्रवाई भी सीमेन्ट रिसर्च वरकर कर रहे हैं। गेट मीटिंगों का सिलसिला भी जारी है। आन्दोलन के पारम्परिक ढंग के सब कदम उठा रहे तथा उनकी अपर्याप्तता देख रहे यह पढ़े-लिखे मजदूर आज की हालात में मजदूर पक्ष की ताकत बढ़ाने के लिये नये कदमों के बारे में विचार कर रहे हैं।

रोटी और सुरक्षा की तंगी व तलाश प्रवासियों-परदेसियों की नित बढती विशाल संख्या की जननी तो है ही, इसने दुनियां के कोने-कोने में प्रवासी-परदेसी-विदेशी को एक गन्दा खतरनाक शब्द भी बना दिया है। कानूनी-गैरकानूनी के पचड़े ऊपर से हैं। अपने परिवार के निष्कासन के खतरे से आतंकित एक प्रवासी मां के शब्द : "मैं जानती हूँ कि यहाँ स्विटजरलैंड में आजादी है पर जब दरवाजे की घन्टी बजती है तब मैं काँपने लगती हूँ।"

आटोलैम्प में तालाबन्दी

यूनिवर्सल इंजिनियरिंग में हड़ताल

सूचना

डाक से साल-भर अखबार प्राप्त करने के लिये 15 रुपये बैंक ड्राफ्ट मनीआर्डर द्वारा शेर सिंह, सम्पादक, फरीदाबाद मजदूर समाचार के नाम से मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद — 121001 के पते पर भेजें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे के ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73